मॉड्यूल - 2

भारतीय समकालीन और लघु चित्रकला की ऐतिहासिक सराहना

6. मध्यकालीन चित्रकला
7. मुग़ल चित्रकला
8. पहाड़ी चित्रकला
9. दक्षिण भारतीय चित्रकला
10. कंपनी चित्रशैली
11. समकालीन कला एवं कलाकार

6

मध्यकालीन चित्रकला

पिछले अध्याय में आपने मौर्य एवं उत्तर–मौर्यकला के बारे में जाना। प्रस्तुत पाठ में हम मध्यकालीन चित्रकला के बारे में जानेंगे। भारत में गुप्त शासकों के पतन तथा देश के अन्य हिस्सों में शक्तिशाली राजवंशों के पराभव के उपरान्त ग्यारहवीं और बारहवीं सदी ईसवी के मध्य अस्थिरता का वातावरण बना रहा। इस दौरान कला और वास्तुशिल्प के क्षेत्र में शायद ही कोई उल्लेखनीय कार्य होने की संभावना कम थी। बहरहाल इस काल में भारतीय कला के खजाने में पाई जानेवाली चित्रित पाण्डुलिपियाँ विविध धर्मों; जैसे- बौद्ध, जैन और हिन्दू धर्म से सम्बद्ध हैं। बौद्ध और जैन धर्म का प्रचार–प्रसार अधिकांशत: भारत के पश्चिमी और पूर्वी भागों में हुआ। भारत की मध्यकालीन कला का एक महत्वपूर्ण योगदान ताड़ के पत्ते पर बौद्ध और जैन धार्मिक ग्रंथ की पांडुलिपियाँ पर चित्रकारी है।

जैन लघु चित्रकला का विकास हुआ और इसे गुजरात में संरक्षण मिला और बौद्ध पांडुलिपि ने बिहार और बंगाल के क्षेत्रों में अपनी चमक दिखाई। ये चित्र ताड़ के पत्तों पर बनाए गए थे। जो सतह के रूप में काम करते थे। पेंटिंग और सुलेख चित्रकला शैली ने दीवार पर चित्रकला की परंपरा का अनुसरण किया लेकिन स्थानीय लोक कला शैलियों के स्पष्ट हस्ताक्षर के साथ। अलग–अलग ताड़ के पत्ते धागे से बंधे हुए थे और लकड़ी के आवरण से घिरे हुए थे। इन लकड़ी आवरणों के आंतरिक भागों को भी खूबसूरती से चित्रित किया गया था।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात आप :

- मध्यकाल की लघु चित्रकला के विकास की पृष्ठभूमि का उल्लेख कर सकेंगे;
- इन चित्रों की मुख्य विशेषताओं का वर्णन कर सकेंगे;
- पाल लघुचित्रों की बुनियादी सूचनाएँ दे सकेंगे;

- चित्रों को बनाने की पद्धति और सामग्री को रेखांकित कर सकेंगे;
- ताड़पत्र की पांडुलिपियों के विषय में जानकारी दे सकेंगे;
- टेम्परा तकनीक की चित्रकला को पहचानकर उसका उल्लेख कर सकेंगे।

6.1 पंचरक्षा तारा

इस पाठ में आप पाल लघु चित्रों को समझेंगे।

बुनियादी सूचना

पाल लघुचित्रों का प्राचीनतम उदाहरण ताड़पत्र पर लिखी गए बौद्धधर्म-संबंधी ग्रंथ, अष्ट साहस्रिका-प्रज्ञापारमिता के रूप में मिलता है। इस ग्रंथ की रचना दसवीं सदी ईस्वी में शासक महिपाल के समय की गई थी जो बौद्धधर्म के महायान समुदाय का अनुयायी था। इस हस्तलिखित पांडुलिपि में विषयवस्तु के साथ बनाए गए चित्र इस समुदाय की चाक्षुष अभिव्यंजनाएँ हैं। जैन लघुचित्रों की भाँति ये चित्र भी पारंपरिक संयोजनों की प्रतिकृतियाँ हैं। आकृतियों के विवरण कोमल बाह्य रेखाओं द्वारा स्पष्ट किए गए हैं जिसमें ऐंद्रियता की अभिव्यक्ति झलकती है।

इस कार्य हेतु ताड़पत्रों को एक लंबी प्रक्रिया द्वारा तैयार किया जाता था। पहले ताड़ के पत्तों को लगभग एक माह तक पानी में डुबोकर रखा जाता था, फिर उन्हें पानी से निकालकर सुखाया जाता था। इसके उपरान्त शंख की सहायता से इन्हें चिकना किया जाता था। तदुपरांत इन्हें आयताकार में काट लिया जाता था। पहले भंगुर पत्रों को सर्वोत्तम गुणवत्ता वाले ताड़ के पत्तों से बदल दिया गया था जिन्हें 'श्रीतादा' कहा जाता था।

चित्र 6.1: पंचरक्षा तारा

ताड़पत्रों पर पाँच से सात पंक्तियाँ लिखने के उपरांत बीच का स्थान चित्रांकन हेतु छोड़ दिया जाता था। चित्रण की पद्धति काफी जटिल होती थी। चित्र का रेखांकन करने से पूर्व पृष्ठभूमि का रंग भर दिया जाता था। इसके उपरांत चित्रित आकृतियों में रंग भरे जाते थे। चित्र में मॉडलिंग का भाव देने हेतु गहरे शेड और हाई लाइट लगाई जाती थी। अंत में काले अथवा लाल रंग से बाह्य रेखाएँ अंकित की जाती थी।

आमतौर पर पीला, सफेद, नीला, काजल से तैयार किया गया काला रंग, सिंदूर से लाल तथा पीला और नीला रंग मिलाकर बनाया गया हरा रंग काम में लाया गया।

शीर्षक : **पंचरक्षा तारा**

माध्यम : टेंपरा

शैली : पाल शैली

काल : 1080 ईस्वी

सामान्य विवरण

इस चित्र में महायान बौद्ध देवी को पद्मासन में बैठा दर्शाया गया है। देवी का एक हाथ उनकी जंघा पर रखा है तथा दूसरा हाथ अभयमुद्रा में है।

उनकी छरहरी देहयष्टि को पीले रंग से भर गया है। आकृति को उभारने हेतु पृष्ठभूमि में लाल रंग भरा गया है। आधी खुली नेत्रोंवाली देवी के सुंदर चेहरे को अनेक प्रकार के आभूषणों; जैसे- मुकुट, कर्णकुण्डल तथा गले में हार आदि से अलंकृत किया गया है। नेत्र और भवों को दोहरा घुमाव दिया गया है तथा नाक तीखी चित्रित की गई है। रंगों में संतुलन है, चमकदार गुलाबी और पीले रंग का संयोजन यद्यपि विपरीत स्वभाव का है, परन्तु उनमें एक प्रकार का संतुलन भी है। प्रयुक्त किए गए सभी रंगों में एक प्रकार की चमक और गहराई है जो चित्रकारों की माध्यम पर संवेदनशील पकड़ को दर्शाती है। आकृतियों के निरूपण को चित्रकारों ने सजीवता प्रदान कर दी है। उन्होंने प्रकृति तथा आकृतियों का अत्यंत शैलीगत ढंग से चित्रण किया है। चित्र-संयोजनों में संतुलन लाने हेतु रंग-योजना का उपयोग किया गया है। आकृतियों की बाह्य रेखाओ में लयात्मकता एवं सटीकता हैं।

पाठगत प्रश्न 6.1

निम्नलिखित को मिलाएँ :

1. पाल वंश का काल	(i) टेंपरा
2. माध्यम में प्रयुक्ता चित्रकला	(ii) पाला
3. चित्रकला की शैली का उल्लेख करें	(iii) 8वीं-13वीं ईस्वी

6.2 जैन ताड़पत्र लघुचित्रकला

ताड़पत्रों पर लिखी गई जैन पाण्डुलियों में बनाए गए लघुचित्र दसवीं से चौदहवीं सदी ईसवी के मध्य गुजरात, राजस्थान तथा अन्य क्षेत्रों में विकसित हुए। ये चित्र वास्तव में 'कल्पसूत्र' जैसे पवित्र जैन धर्मग्रंथों में चित्रित दृष्टांत हैं। बाद के समय में ये चित्र कागजों पर भी बनाए गए। चमकदार रंग-योजना तथा आँखों के कोणीय रेखांकन के कारण आँखें चेहरे की बाह्य रेखा से बाहर निकली चित्रित की जाती हैं जिसके कारण जैन चित्र पहचाने जाते हैं। ये ताड़ पर आयताकार में बनाए गए हैं। लिखाई एवं चित्रण हेतु स्थान का वितरण समान रूप से किया गया है। चित्रों की शैली एक प्रकार से शुद्ध चित्र खींच देनेवाले की भाँति है।

चित्र 6.2: कल्पसूत्र (श्वेताम्बर)

शीर्षक	:	**कल्पसूत्र (श्वेताम्बर)**
माध्यम	:	ताड़पत्र पर टेंपरा
काल	:	1509 ईसवी
माप	:	8 से. मी. × 22 से. मी.

सामान्य परिचय

'कल्पसूत्र' श्वेताम्बर जैन समुदाय का एक पवित्र ग्रंथ है। जिसमें जैन तीर्थंकरों के जीवन-संबंधी कथानक का उल्लेख है। यह अर्धमागधी प्राकृत लिपि में लिखा गया है तथा इसके लेखन का श्रेय भद्रबाहु को जाता है।

प्रस्तुत चित्र (6.2) 'कल्पसूत्र' की पोथी का एक ताड़पत्र चित्रित पृष्ठ है। इस चित्र के दो खण्ड हैं। चित्र के दाहिने खण्ड में पशु आकृति का सिर किसी देव का है जिसका शेष शरीर मानव का है। वह हाथ में शिशु को लिए हुए है। चित्र के बाएँ खण्ड में पलंग पर रानी मां को अपने नवजात शिशु के साथ लेटे हुए दर्शाया गया है। इन चित्र खण्डों में एक तीर्थंकर के जन्म की कथा को प्रदर्शित किया गया है।

इन चित्रों में जैन लघुचित्रों की सारी विशेषताएँ जैसे- आकृतियों का कोणीय रेखांकन तथा लाल पृष्ठभूमि देखी जा सकती है। यद्यपि मानव आकृतियों के चेहरे एक तरफ देखते बनाए गए हैं, परन्तु उनकी दूसरी आँख भी चित्रित की गई है। ये लम्बी आँखें चेहरे की बाह्य सीमा से बाहर निकली हुई चित्रित की गई हैं।

पृष्ठभूमि में सपाट रंग भरा गया है और बाहरी किनारों के पास गहरे रंग के प्रयोग से चित्र में भार या ठोसता का आभास होता है। आकृतियों के रेखांकन में लयात्मकता के कारण आकृतियों में गतिशीलता का आभास होता है।

पाठगत प्रश्न 6.2

1. जैन लघुचित्र कब और कहाँ विकसित हुए?
2. 'कल्पसूत्र' क्या है? इसकी रचना किसने की?
3. जैन लघुचित्रों का माध्यम क्या है?

6.3 राजस्थानी चित्र

'रागमाला चित्र' राजस्थानी शैली में बहुत लोकप्रिय कलाकृति है। अब हम राजस्थानी चित्रकला के बारे में जानेंगे।

बुनियादी सूचना

भारतीय चित्रकला के इतिहास में गुजरात तथा राजस्थान का महत्वपूर्ण स्थान है। 16वीं ईसवी तक राजस्थानी चित्रों में परिपक्वता आ चुकी थी। प्रारम्भिक राजस्थानी चित्रों में एक विशिष्ट शैली दिखाई देती है। जिनमें बाहर निकली आँखें तथा समकालीन पोशाकों का चित्रण होता था। परन्तु सोलहवीं सदी के अंत तक आते-आते मुगल लघुचित्र कला प्रभाव के कारण इनकी शैली में परिवर्तन हुआ था। इस समय राजस्थान में चित्रकला के अनेक केंद्र विकसित हो गए; जिनमें मेवाड़, बूंदी, कोटा, प्रतापगढ़, किशनगढ़ और मालवा आदि प्रमुख थे।

राजस्थानी चित्रों में अत्यधिक विषय विविधता थी। ये चित्र धार्मिक, राजसी, धर्मनिरपेक्ष और व्यक्ति चित्र थे। इन विभिन्न विषयों में से महान कवि जयदेव द्वारा रचित 'गीत गोविन्द' पर आधारित चित्र लोकप्रिय हैं।

चित्र 6.3: तोड़ी रागिनी

शीर्षक	:	**तोड़ी रागिनी**
माध्यम	:	टेंपरा
शैली	:	प्रतापगढ़
काल	:	1710 ईसवी

सामान्य विवरण

यह चित्र रागमाला शृंखला पर बनाए गए अनेक चित्रों में से एक है। रागमाला चित्र भारतीय शास्त्रीय संगीत की विभिन्न मनोदशाओं को व्यक्त करने वाले राग तथा रागनियों पर आधारित चाक्षुष

अभिव्यक्तियाँ हैं। चित्र में तोड़ी रागिनी को एक वाद्ययंत्र पर बजाते दर्शाया गया है। संगीत की धुन से आकर्षित होकर दो हिरण आ गए हैं और संगीत की लय पर मंत्रमुग्ध हैं।

चित्र का संयोजन अति संतुलित है। पृष्ठभूमि में सपाट रंग भरा गया है। फिर भी उसमें गहराई का अनुभव होता है। चित्रकार ने एक मनोरम प्राकृतिक उपवन का माहौल उत्पन्न करने में सफलता प्राप्त की है। चमकदार रंगों का प्रयोग किया गया है तथा उनकी प्रभाव-क्षमता में वृद्धि करने हेतु नारी के वस्त्रों तथा आसपास के वृक्षों पर महीन (छोटे-छोटे) बिन्दुओं का प्रयोग किया गया है। मानव तथा पशु आकृतियाँ जीवंत और गतिशील हैं। यह चित्र संगीत और काव्य के सम्मिश्रण का अनूठा उदाहरण है। इसमें एक काव्यात्मक गीतात्मकता है। यह चित्रण मनोदशा और भावना का अभिव्यंजक है।

पाठगत प्रश्न 6.3

1. राजस्थानी चित्रों की सामान्य विशेषताएँ क्या हैं?
2. राजस्थानी चित्रकला की कुछ प्रसिद्ध शैलियों के नाम लिखिए।
3. राजस्थानी चित्रकारों को किस काव्य रचना ने चित्र बनाने हेतु सर्वाधिक प्रेरित किया? उस काव्य तथा लेखक का नाम लिखिए।

क्रियाकलाप

लघुचित्रों की कोई एक शैली बनाइए तथा शैली की प्रमुख विशेषताएँ भी लिखिए

.....

.....

.....

आपने क्या सीखा

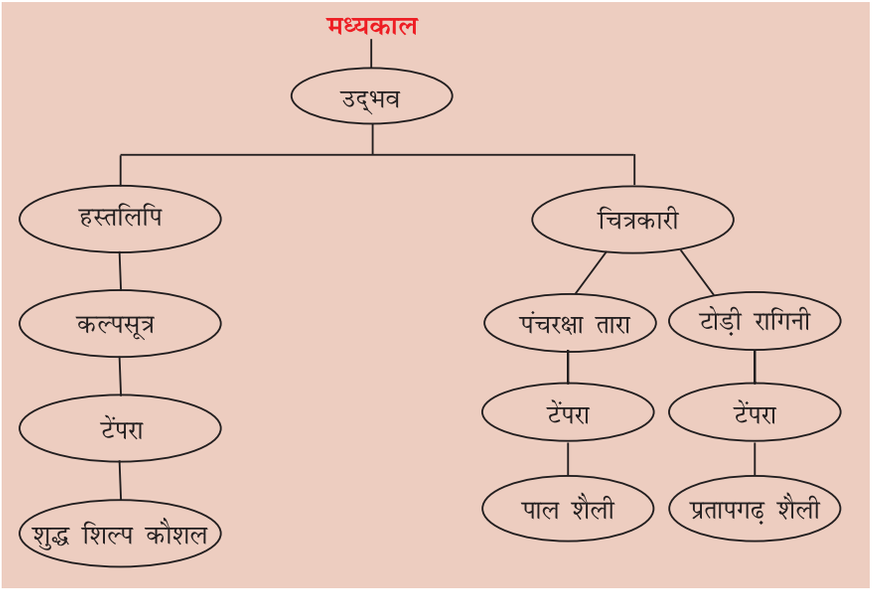

सीखने के प्रतिफल

शिक्षार्थी करते हैं :

- स्वयं विभिन्न प्रकार के लघुचित्र रूपों की रचना।
- विभिन्न सतहों पर सुलेख विधि का प्रयोग।

पाठांत प्रश्न

1. मध्यकाल में लघुचित्रों की पृष्ठभूमि और उनके विकास का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
2. ताड़पत्रों को तैयार करके उन पर किस प्रकार चित्रकारी की जाती थी? संक्षेप में लिखिए।
3. ताड़पत्र पर बनाए गए जैन लघुचित्रों की विशेषताएँ लिखिए।
4. 'तोड़ी रागनी' का वर्णन कीजिए।
5. 'रागमाला' क्या है? स्पष्ट कीजिए।
6. 'टोड़ी रागिनी' चित्रकला दिखने में कैसी है?
7. जैन शैली की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
8. 'कल्पसूत्र' चित्र का वर्णन कीजिए।
9. सूचीबद्ध चित्र कल्पसूत्र क्या दर्शाता है?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

6.1

1. 8 वीं सदी से 13 वीं सदी ईसवी
2. टेंपरा
3. पाल

6.2

1. गुजरात, राजस्थान तथा अन्य क्षेत्रों में दसवीं सदी ईसवी में।
2. श्वेताम्बर जैन समुदाय का धार्मिक ग्रंथ 'कल्पसूत्र' जिसके रचयिता भद्रबाहु हैं।
3. ताड़पत्र पर टेंपरा

6.3

1. बाहर निकली आँखें तथा समकालीन वस्त्रों का उपयोग।
2. मेवाड़, बूंदी, कोटा, प्रतापगढ़, किशनगढ़ और मालवा।
3. 'गीत गोविन्द' जिसके रचयिता जयदेव हैं।

शब्दकोश

मध्यकाल	900 ईसवी से 1400 ईसवी तक का छवि इतिहास
पाण्डुलिपि	हाथ से लिखी पुस्तक
सुलेखन	अलंकृत लिखाई या सुलेख
महायान	बौद्ध धर्म का एक संप्रदाय जो चित्र पूजा में विश्वास रखता है।
पदमासन	घुटने मोड़कर बैठने का एक विशेष ढंग
श्वेताम्बर	जैन धर्म का एक समुदाय जो केवल सफेद कपड़े पहनता है।
ड्राफ्टमैनशिप	तकनीकी कौशल
संश्लेषण	विभिन्न तत्वों का संयोजन
छंदशास्त्र	कविताओं में लिखा (काव्य)/साहित्यशास्त्र